SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

शिक्षा से अधूरेपन को पूर्ण करता 'हॉफ मैन'

पारुल, शोधार्थी, हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग
महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author
पारुल, शोधार्थी, हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग
महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय,
वर्धा, महाराष्ट्र, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 22/04/2021
Revised on : -----
Accepted on : 29/04/2021
Plagiarism : 01% on 22/04/2021

Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 1%

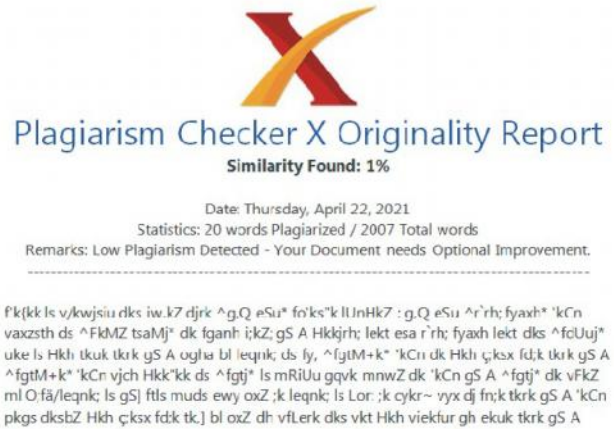

Date: Thursday, April 22, 2021
Statistics: 20 words Plagiarized / 2007 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

f'k{kk ls v/kwjsiu dks iw.kZ djrk ^g.Q eSu* fo'ks"k lUnHkZ : g.Q eSu ^r`rh; fyaxh* 'kCn vaxzsth ds ^FkMZ tsaMj* dk fganh i;kZ; gS A Hkkjrh; lekt esa r`rh; fyaxh lekt dks ^fdUuj* uke ls Hkh tkuk tkrk gS A ogha bl leqnk; ds fy, ^fgtM+k* 'kCn dk Hkh ç;ksx fd;k tkrk gS A ^fgtM+k* 'kCn vjch Hkk"kk ds ^fgtj* ls mRiUu gqvk mnwZ dk 'kCn gS A ^fgtj* dk vFkZ ml O;fä/leqnk; ls gS] ftls muds ewy oxZ ;k leqnk; ls Lor% ;k cykr~ vyx dj fn;k tkrk gS A 'kCn pkgs dksbZ Hkh ç;ksx fd;k tk,] bl oxZ dh vfLerk dks vkt Hkh viekfur gh ekuk tkrk gS A

शोध सार

'तृतीय लिंगी' शब्द अंग्रेजी के 'थर्ड जेंडर' का हिंदी पर्याय है। भारतीय समाज में तृतीय लिंगी समाज को 'किन्नर' के नाम से भी जाना जाता है। वहीं इस समुदाय के लिए 'हिजड़ा' शब्द का भी प्रयोग किया जाता है। 'हिजड़ा' शब्द अरबी भाषा के 'हिजर' से उत्पन्न हुआ उर्दू का शब्द है। 'हिजर' का अर्थ उस व्यक्ति/समुदाय से है, जिसे उनके मूल वर्ग या समुदाय से स्वतः या बलात् अलग कर दिया जाता है। शब्द चाहे कोई भी प्रयोग किया जाए, इस वर्ग की अस्मिता को आज भी अपमानित ही माना जाता है। प्राचीन समय में भले ही इस समुदाय की स्थिति अपेक्षाकृत सुदृढ़ रही हो, परन्तु वर्तमान समय में यह समुदाय स्वयं को मनुष्य माने जाने के लिए संघर्ष कर रहा है। समाज या तो इन्हें देवता, उपदेवता आदि मानता है या फिर इनके अस्तित्व को पूर्व जन्म के बुरे कर्मों से जोड़कर देखता है। अपने स्वार्थ के लिए समाज में यह मान्यता गढ़ी गई कि तृतीय लिंगी समाज के लोग दैवीय शक्ति से संपन्न है और इनसे दुआ और बद्दुआ जैसी धारणाएं जोड़ी जाने लगी, किन्तु समाज ने कभी यह विचार नहीं किया कि वे इस दैवीय शक्तियों से युक्त प्राणी के साथ किस तरह का व्यवहार करता है। समाज के लिए यह वर्ग मनुष्यता की श्रेणी में नहीं आता। हालांकि 15 अप्रैल 2014 को माननीय सर्वोच्च न्यायलय ने इस समुदाय को पहचान देने के लिए स्त्री और पुरुष से इतर 'तीसरे लिंग' का दर्जा दिया है। इसी के साथ इन्हें सभी मानवीय अधिकारों को दिए जाने की घोषणा भी की गई है। यह दिन इस वर्ग के लिए ऐतिहासिक महत्त्व रखता है।

मुख्य शब्द

तृतीय लिंग समाज, संवेदना, समस्या, समाधान.

बहुत से विशेषाधिकार मिल जाने के बाद भी यह

वर्ग आज भी उपेक्षित है, समाज की रूढ़िगत मानसिकता इसका कारण है। जिस प्रकार दलित समाज मुख्यधारा में आने के लिए समाज से संघर्ष करता है, ठीक इसी प्रकार तृतीय लिंगी समुदाय की लड़ाई भी समाज से ही है। उन्हें सामाजिक तौर पर आज भी स्वीकृति नहीं मिल पाई है। दरअसल हमारी सामाजिक संरचना स्त्री व पुरुष के इतर किसी अन्य के अस्तित्व को स्वीकारने के लिए तैयार नहीं है। डॉ. प्रमिला त्रिपाठी के अनुसार "हमारे समाज में जेण्डर की समाजीकरण की प्रक्रिया के तहत स्त्री–पुरुष व्यवहार व स्वभाव को ही स्वीकृति दी जाती है। इस दृष्टिकोण से तृतीय लिंगी समुदाय का व्यवहार समाज में स्वतः ही अव्यावहारिक मान लिया जाता है। जेण्डर निर्मित में यौन व्यवहार की शिक्षा नहीं दी जाति अपितु उनके यौन व्यवहार को कानूनी अपराध माना जाता है जो कि उन्हें स्व से घृणा और आत्महत्या के लिए मजबूर करता है।"[1] इस कठोर संरचना में तृतीय लिंगी समुदाय के लिए मुख्यधारा में कोई स्थान नहीं है। समाज ने केवल उसी का महत्त्व स्वीकार किया जो संतान पैदा करने में सक्षम है। जाहिर सी बात है कि इसमें स्त्री और पुरुष ही आते हैं। "हिजड़े भी मानव समाज का ही एक हिस्सा है। उनमें वह सब कुछ है, जो एक मानव को मानव बनाता है। कमी है तो सिर्फ प्रजनन क्षमता न होना या समलिंगी कामभाव होना, केवल इस कमी के कारण उन्हें पर्याप्त सजा भोगनी पड़ी है।"[2] हालांकि जो स्त्रियाँ किसी कारणवश ऐसा करने में समर्थ नहीं होती, उन्हें 'बाँझ' कहकर दुत्कारा जाता है। यदि पुरुष में भी कोई कमी हो, तो उन्हें 'नपुंसक' कहकर अपमानित किया जाता है। इसका अर्थ यह हुआ कि संतान पैदा करना ही मनुष्य का परम धेय समझा जाता है। यही कारण है कि इस समुदाय को हमेशा से मुख्यधारा से खदेड़ा ही गया है।

साहित्य में तृतीय लिंगी समुदाय पर पिछले कुछ अरसे से लेखन कार्य किया जा रहा है। इन्हें केंद्र में लाने के लिए साहित्य में इनके जीवन, संघर्ष तथा चुनौतियों को वाणी दी गयी है। भुवनेश्वर उपाध्याय कृत 'हॉफ मैन' उपन्यास को तृतीय लिंगी समाज के जीवन व संघर्ष की एक सफल अभिव्यक्ति कही जा सकती है। दरअसल इस समाज के लोगों के जीवन की पीड़ा की शुरुआत इनके अपने घर–परिवार से होती है, क्योंकि इनके अपने परिवार वाले ही इन्हें नहीं अपनाते। ऐसी संतानो को या तो जन्मोपरांत ही मार दिया जाता है या इनका जीवन इतना कष्टमय बना दिया जाता है कि ये आजीवन हिकारत और हीनताबोध से जूझते रहते हैं। बालपन से ही मिले पारिवारिक विस्थापन की पीड़ा इन्हें भोगनी पड़ती है। ऐसे में 'हॉफ मैन' उपन्यास इस परिस्थिति के विपरीत एक ऐसा उदाहरण प्रस्तुत करता है, जिससे समाज में इनके प्रति सकारात्मक दृष्टि का प्रसार होता है। उपन्यास के पात्र अर्जुन को उसके माता–पिता समाज के तमाम उलाहनों को दर–किनार कर सहर्ष अपनाते हैं। "मैं इसे हर हाल में जन्म दूंगी। दूसरा बच्चा होगा तब भी, और नहीं होगा तब भी।"[3] इस स्वीकृति से अर्जुन एक सामान्य जीवन व्यतीत कर पाता है, जो कि अन्य तृतीय लिंगी लोगों को नहीं मिल पाता। इसका कारण पारिवारिक अस्वीकृति ही होता है। यहीं से इनके जीवन का रूप बद–से–बदतर होता चला जाता है। इस सराहनीय कदम को लेखक ने जिस प्रकार उपन्यास में अपने पात्रों द्वारा संभव कर दिखाया है, उसी प्रकार वास्तविक समाज में भी ऐसा किया जाना चाहिए।

शिक्षा किसी भी समाज के विकास का आधार स्तम्भ है। तृतीय लिंगी समुदाय को पारिवारिक स्वीकृति के अभाव में बहुत दयनीय परिस्थितियों में अपना जीवन व्यतीत करना पड़ता है। जिसके कारण वे शिक्षा का अधिकार मिलने पर भी शिक्षा से वंचित ही रह जाते हैं। इसका कारण है, जीविकोपार्जन हेतु साधन जुटाने का संकट। इनके पास रोजगार का अभाव होता है, जिसके चलते ये अपने पारंपरिक पेशे में ही जुट जाते हैं। 'हॉफ मैन' उपन्यास के लेखक ने अर्जुन को एक सशक्त व्यक्तित्व के तौर पर गढ़ा है, जो न केवल शिक्षा ग्रहण करता है, बल्कि आई. ए. एस. बनकर सफल भी होता है तथा समाज में सम्माननीय जीवन बिताता है। यह सब वह शिक्षा के बल पर ही कर पाता है। उपन्यास में इस समुदाय की शिक्षा के महत्त्व का प्रसंग समाज में चेतना का प्रसार करता है। शिक्षा से ही मनुष्य में चेतना पैदा होती है। यह समाज जब शिक्षित होगा तब अपने अधिकारों और कर्तव्यों से भी परिचित हो पाएगा, तब जाकर वे भी समाज के विकास में अपना योगदान दे पाएंगे, जिसके फलस्वरूप इनके अस्तित्त्व का महत्त्व भी स्वीकार किया जाएगा।

एक तरफ उपरोक्त पक्षों को लेकर यह उपन्यास सराहनीय कहा जा सकता है, किन्तु एक स्थल पर पाठक

को निराश भी होना पड़ता है। इस उपन्यास के अनुसार अर्जुन एक ट्रांसजेंडर है। उपन्यास में इस बात की पुष्टि उसकी माता के गर्भ जांच को देखकर एक डॉ. कहती हैं "यस मिस्टर पारस! अभी हंड्रेड परसेंट श्योर नहीं हूँ, शायद आपका बच्चा ट्रांसजेंडर है। एक दो महीने बाद कन्फर्म कह सकूंगी।"[4] इस उद्दरण के अनुसार बच्चे के जन्म से पहले ही उसको ट्रांसजेंडर घोषित कर दिया जाता है, परंतु यह संभव नहीं है। इसको समझने के लिए 'ट्रांसजेंडर' शब्द पर प्रकाश डालना आवश्यक है। 'ट्रांसजेंडर' का शाब्दिक अर्थ है जेंडर से परे या पारलैंगिक। उस व्यक्ति को ट्रांसजेंडर कहा जाता है, जो अपने जैविक लिंग से विपरीत महसूस करता है, जैसे यदि कोई व्यक्ति जिसे जैविक रूप से पुरुष लिंग प्राप्त हुआ है, स्वयं को मानसिक रूप से एक महिला के रूप में अधिक सहज महसूस करे, तो उसे ट्रांसजेंडर वर्ग के अंतर्गत शामिल किया जाएगा। ठीक इसी प्रकार यदि यह स्थिति किसी महिला के साथ होती है, तो वह भी ट्रांसजेंडर ही कहलाएगी। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि इस प्रकार के लोगों में किसी प्रकार की लैंगिक विकृति नहीं होती परन्तु यह जन्म से ही निर्धारित नहीं हो जाता है। इस तरह की समझ बनाने में बच्चे को सामान्यतः 4 से 12 वर्ष लग जाते हैं। इससे उपन्यास के इस प्रसंग पर स्वतः ही प्रश्नचिंह लग जाता है।

उपन्यास में अर्जुन के चरित्र का गहराई से अध्ययन करने के बाद यह स्पष्ट होता है कि वह 'इंटरसेक्स' की श्रेणी में आता है। 'इंटरसेक्स' शब्द के अर्थ स्पष्टीकरण के पश्चात् उपन्यास के कुछ उद्दरण यहाँ दिए जाएंगे, जिससे अर्जुन के इस श्रेणी में होने का प्रमाणित किया जा सकता है। उस व्यक्ति को 'इंटरसेक्स' कहा जाता है, जो किसी लैंगिक विकृति के साथ जन्म लेता है। इस स्थिति को मध्यलिंगी होना भी कहा गया है। सरल शब्दों में कहा जाए, तो जन्म के समय अस्पष्ट यौन अंगों के साथ जन्मा व्यक्ति 'इंटरसेक्स' कहा जाता है। ये अस्पष्टता या विकृति कई प्रकार की होती है, जैसे – कभी लिंग या योनि का अविकसित रूप में उपस्थित होना तो कभी यौनांग का आकार में बहुत छोटा या बड़ा होना। किसी–किसी व्यक्ति में योनि और लिंग का मिश्रित रूप भी देखा जाता है। कुल मिला कर इसे लैंगिक विकृति या अंतरलिंगी कहा जा सकता है। यहाँ यह भी स्पष्ट है कि ट्रांसजेंडर की पहचान व्यक्ति के मन–मस्तिष्क से जुड़ी है और इंटरसेक्स व्यक्ति की पहचान उसकी शारीरिक संरचना से। उपन्यास के पात्र अर्जुन के सन्दर्भ में यदि बात की जाए, तो कुछ इसी तरह की विकृति सामने आती है "कुछ ही दूर पर उसी के साथ आये दो सीनियर लड़के उसके सामने खड़े होकर टॉयलेट कर रहे थे। उसकी निगाह उनके उस अंग पर पड़ी जिसके कारण वे खड़े होकर ये सब करने में सक्षम थे।... उसने एक दो बार खड़े होकर पेशाब करने की कोशिश की थी, मगर उसके कपड़े खराब हो गए थे।"[5] इसी तरह अपने दोस्त को सच्चाई बताते हुए वह कहता है "अर्जुन ने बिना कुछ कहें अपनी हाफपैंट नीचे खिसका दी।... उसकी आँखों में अजीब सी हताशा नजर आ रही थी। उसके होठ हिले 'मैं तुम लड़कों जैसा नहीं हूँ।'' और वह बुदबुदाते हुए रोने लगा।"[6] उपरोक्त पंक्तियों से यह स्पष्ट हो जाता है कि वह ट्रांसजेंडर नहीं, बल्कि इंटरसेक्स की श्रेणी में आता है। तृतीय लिंगी समाज के बारे में वास्तविकता से अधिक भ्रांतियां फैलायी गयी हैं। इनके जन्म, रहन–सहन, परम्पराएं तथा मृत्यु को लेकर भी कई भ्रांतियों को समाज में फैलाया गया। यह सब साजिश के तहत किया गया, जिससे समाज में इनके प्रति भय तथा नफरत आदि का संचार किया जा सके। यह सब इस समाज को हाशिये पर धकेलने के लिए किया जाता रहा है। समाज में एल. जी.बी.टी.क्यू.आई के वर्ग के बारे में भी अधिक जागरूकता नहीं है। ऐसे में इस वर्ग की अस्मिता से जुड़े संवेदनशील विषय पर एक साहित्यकार को सावधानी से लेखन करना चाहिए। अस्मिताओं के प्रति सजग न रहने के कारण यह 'हॉफ मैन' उपन्यास का कमजोर पक्ष बन जाता है।

यद्यपि सम्पूर्ण रूप से देखा जाए, तो यह उपन्यास समाज के लिए प्रेरणादायक साबित होता है। इसमें सभी मनुष्यों के प्रति मानवीय दृष्टिकोण अपनाने पर बल दिया गया है। इस क्षेत्र में आये अन्य उपन्यासों से अलग इसमें लेखक ने मनुष्य की उपयोगिता को यौन संबंध से जोड़ने का विरोध तार्किक दृष्टि से किया है। "जैन मुनि हों या नागा साधू या फिर जो ब्रह्मचर्य को अपना कर अपनी जिंदगी सैक्स को हमेशा के लिए त्याग देते हैं उन्हें ये समाज पूजता है, उनकी फोटो पूजा घरों में रखता है, और जिनसे ये सब कुदरत ने ही छीन लिया है उसे, उसके ही घर से इसी कमी के लिए आरोपित करके दुत्कार दिया जाता है। ये कहाँ का न्याय है?"[7] लेखक अर्जुन के माध्यम से साधू संतो के उदाहरण देकर समाज में मनुष्यता की परिभाषा बदलने पर जोर देता है। एक मनुष्य की उपयोगिता

को संतानोत्पत्ति तक सीमित रखना अन्याय है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि 'हॉफ मैन' उपन्यास समाज में तृतीय लिंगी समाज के प्रति संवेदनाओं को जाग्रत करता है। उपन्यासकार ने इस समाज के लोगों की समस्याओं के साथ निदान भी प्रस्तुत किया है। इसी के साथ यह उपन्यास इस उपेक्षित वर्ग के प्रति समाज को सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाने पर बल देता है ताकि यह वर्ग भी मुख्यधारा में अहम् भूमिका अदा कर सके।

संदर्भ सूची

1. (सं) मेहरा, दिलीप (2019). *हिन्दी साहित्य में किन्नर जीवन.* नई दिल्ली. वाणी प्रकाशन, पृष्ठ – 62।
2. डागा, शीला (2020). *किन्नर गाथा.* नयी दिल्ली. वाणी प्रकाशन, पृष्ठ – 40।
3. उपाध्याय, भुवनेश्वर (2020). *हॉफ मैन.* कानपुर. अमन प्रकाशन, पृष्ठ – 13।
4. उपाध्याय, भुवनेश्वर (2020). *हॉफ मैन.* कानपुर. अमन प्रकाशन, पृष्ठ – 13।
5. उपाध्याय, भुवनेश्वर (2020). *हॉफ मैन.* कानपुर. अमन प्रकाशन, पृष्ठ – 26।
6. उपाध्याय, भुवनेश्वर (2020). *हॉफ मैन.* कानपुर. अमन प्रकाशन, पृष्ठ – 28।
7. उपाध्याय, भुवनेश्वर (2020). *हॉफ मैन.* कानपुर. अमन प्रकाशन, पृष्ठ – 122।

Webliography

8. https://issuu.com/futuresamachar/docs/future_samachar_july_2019
9. http://www.captainlalchand.com/uploads/8/8/5/3/88539188/manushayk.pdf
10. https://www.dhyeyaias.com/sites/default/files/Daily-Current-Affairs-for-UPSC-IAS-State-PCS-SSC-Bank-SBI-Railway-All-Competitive-Exams-23-March-2021_www.dhyeyaias.com_.pdf
11. https://www.scribd.com/doc/220400937/ank-88
12. https://www.slideshare.net/HRLNIndia/sexual-harassment-training-manual-in-hindi

****